

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

अश्विन नवरात्रि साधनाएं - २०२५

२२-०९-२०२५ से ०१-१०-२०२५

विजयादशमी - ०२-१०-२०२५ (सीमोल्लंघन)

सरस्वती आवाहन - २९-०९-२०२५ (सप्तमी)

सरस्वती पूजन - ३०-०९-२०२५ (अष्टमी)

सरस्वती विसर्जन - ०१-१०-२०२५ (नवमी)

दुर्गाष्टमी - ३०-०९-२०२५

आयुध पूजन - ०१-१०-२०२५ (नवमी)

१) चण्डी साधना : (पूर्ण रक्षा, देवी कृपा हेतु)

विधान: साधक या साधिकाये अश्विन नवरात्रि में स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण कर , पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और चण्डी यंत्र या महा दुर्गा यंत्र स्थापित कर पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करे , गुरु मंत्र जप कर साधना आरंभ करें । नवरात्रि में १२५० माला जप संपन्न करे ।

मंत्र: ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ॥

सामाग्री: चण्डी यंत्र / महादुर्गा यंत्र, मुंगा / सफेद हकीक माला

जप संख्या: १२५० माला

२) दुर्गा साधना: (कुटुंब संरक्षण , बाधा निवारण आदि के लिये)

विधान: साधक या साधिकाये अश्विन नवरात्रि में स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण कर , पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और दुर्गा यंत्र स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे , गुरु मंत्र जप कर साधना आरंभ करें | नवरात्रि में १२५० माला जप संपन्न करे |

मंत्र: || ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ||

सामाग्री: दुर्गा यंत्र, दुर्गा माला

जप संख्या: १२५० माला

३) बल, रक्षा हेतु:

विधान: साधक या साधिकाये अश्विन नवरात्रि में स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण कर , पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और दुर्गा यंत्र स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे , गुरु मंत्र जप कर साधना आरंभ करें | नवरात्रि में नित्य १०८ बार उच्चारण करे |

मंत्र: || आर्या दुर्गा वेद गर्भा,
अम्बिका भद्र काल्यपी |
भद्रा क्षेमा क्षेमंकरी,
नैक बाहुर् नमामि तां |

सामाग्री: दुर्गा यंत्र

जप संख्या: नित्य १०८ बार उच्चारण करे |

४) विद्या प्राप्ति:

विधान: साधक या साधिकाये , अश्विन नवरात्रि के तीन दिन – सप्तमी, अष्टमि, नवमी (२९, ३० सितंबर, ०१ अक्टूबर) में स्नान आदि से निवृत्त होकर सफेद वस्त्र धरण कर पूर्व या उत्तर दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और सरस्वती यंत्र, स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे | गुरु मंत्र जप कर साधना आरंभ करें |

मंत्र: || ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः ||

सामाग्री: सरस्वती यंत्र, स्फटिक माला

जप संख्या: २१ माला

५) चण्डी रक्षा साधना (एक दिवसीय-अष्टमी):

विधान: साधक या साधिकाये , अश्विन नवरात्रि में अष्टमी के दिन, रात्री को स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धरण कर पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और चण्डी यंत्र, स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे | गुरु मंत्र जप कर साधना आरंभ करें |

मंत्र: || ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ ग्लौ हूं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल
प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा |

सामाग्री: चण्डी यंत्र, मुंगा / हकीक माला

जप संख्या: २१ माला

६) नित्य दुर्गा प्रयोगः

विधानः साधक या साधिकाये अश्विन नवरात्रि में स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण कर , पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और दुर्गा यंत्र या विग्रह स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे , गुरु मंत्र जप कर साधना आरंभ करें | नवरात्रि में नित्य ११ माला जप करे |

मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै दुं नमः ॥

सामाग्रीः दुर्गा यंत्र या विग्रह, मुंगा माला / हकीक माला

जप संख्याः ११ माला
